जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिस आत्मा में आत्म-रुचि, आत्म-ज्ञान और आत्मलीनता रूप धर्म पर्याय प्रकट होती है, उसमें धर्म के ये क्षमादि दशलक्षण सहज प्रकट हो जाते हैं।
ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ : ७

वर्ष : 28, अंक : 10 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (द्वितीय) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

28 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 05 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 28 वें बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार दिनांक 31 जुलाई को प्रात: श्री विमलकुमारजी जैन नीरू कैमिकल्स दिल्ली के करकमलों से हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने की तथा मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचन्दजी सर्राफ विदिशा थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने वर्तमान युग में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने किया।

उद्घाटनसभा के पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के उद्घाटन प्रवचन से हुआ; तत्पश्चात् श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार, किशनगढ़ द्वारा झण्डारोहण एवं शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी जैन ओसवाल के करकमलों से हुआ।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी व सुपुत्र श्री अशोकजी पाटनी कोलकाता, दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल राजकोट एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जबलपुर थे।

शिविर के अवसर पर **श्री गणधर वलय विधान** के आयोजनकर्त्ता श्री बाबूलालजी सुखलालजी पंचोली परिवार थांदला, श्री मगनलालजी मामा आरोन-गुना, पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम तथा श्री गम्भीरमलजी महेन्द्रकुमारजी धर्मेन्द्रकुमारजी जैन मानसरोवर, जयपुर थे। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी धवल, भोपाल द्वारा कराये गये।

शिविर में मुख्य प्रवचन के रूप में प्रतिदिन प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार परमागम पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी एवं पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ भी सभी को प्राप्त हुआ।

मुख्य प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन क्रमश: हुये। प्रतिदिन के कार्यक्रमों का प्रारंभ प्रात: 5 बजे गुरुदेवश्री के टेप प्रवचन से होता था।

शिक्षण कक्षायें ह्न शिविर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा **पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं (निमित्तोपादान)**, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा **परमार्थवचनिका**, ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा **छहढाला**, ब्र.यशपालजी जैन द्वारा **गुणस्थान विवेचन**, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा **द्रव्यसंग्रह**,

(शेष पृष्ठ 7 पर ....)

डॉ. भारिल्ल विद्यावारिधि उपाधि से सम्मानित

जयपुर : यहाँ रविवार, दिनांक 7 अगस्त को शिक्षण-शिविर के मध्य सम्पूर्ण जैन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था भारत जैन महामण्डल की ओर से जैन समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को भव्य समारोह में **विद्यावारिधि** उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता भारत जैन महामण्डल की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष श्री सम्पतकुमारजी गदइया ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के **शिक्षा मंत्री** श्री घनश्यामजी तिवाड़ी थे। आपका शाल ओढ़ाकर माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया गया। आपने डॉ. भारिल्ल के साहित्य की प्रशंसा और टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से अपने आत्मीय संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि ह्न डॉ. भारिल्ल बहुत बड़े विद्वान हैं। उनकी धर्म के दशलक्षण जैसी अनेक चर्चित पुस्तकें हैं। यहाँ भारिल्लजी को **विद्यावारिधि** की उपाधि से सम्मानित किया गया है यह वास्तव में उनका नहीं बल्कि उनके ज्ञान का सम्मान है। इस सम्मान से समाज को प्रेरणा मिलेगी और उनके पथप्रदर्शन से समाज आगे बढ़ेगी।

आपने श्रमण संस्कृति की चर्चा करते हुए कहा कि श्रमण संस्कृति और वैदिक संस्कृति की धारा अविरल गति से अनन्तकाल से एक साथ बहती आ रही है। उसी धारा को डॉ. भारिल्ल ने आगे बढ़ाते हुए साहित्य सृजन का कार्य किया है इसके लिए वे श्रद्धा के पात्र हैं।

मैं भारत सरकार से इनके नाम को पद्मश्री के लिए रिकमंड अवश्य करना चाहूँगा।

(शेष पृष्ठ 8 पर ....)

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

8 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार भी इस प्रवचन को ध्यान से सुन रहे थे। उनके मन में अनेक प्रश्न उठे; क्योंकि ऐसा आध्यात्मिक प्रवचन उन्होंने पहली बार ही सुना था। वह ज्ञान-वैराग्य परक प्रवचन सुनकर उनका हृदय हिल गया। वे बहुत ही प्रभावित हुए; परन्तु उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि न केवल जन-जन की स्वतंत्रता और न केवल मात्र जीवों की स्वतंत्रता, ये तो कण-कण की स्वतंत्रता की बात कह रहीं है ह्न यह कैसे संभव है ?

स्वतंत्रकुमार सोचता है ह्न ''क्या कण-कण अर्थात् पुद्गल का एक-एक परमाणु स्वतंत्र है ? मैंने तो अबतक प्रवचनों में ऐसा सुना है कि ह्न 'आत्मा कर्मों के अधीन है, कर्म बहुत बलवान होते हैं, ये जीवों को नाना प्रकार से नाच नचाते हैं। कहा भी है ह्न 'कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नर्क दिखावे।' तथा यह भी स्तुति में बोलते हैं कि ह्न हे प्रभो ! मैंने इनका कुछ भी बिगाड़ नहीं किया, फिर भी इन कर्मों ने बिना कारण बहुविध वैर लिया है। ये कर्म ही तो जीवों को चौरासी लाख योनियों में भटकाते हैं। यद्यपि नरक और निगोद हमें इन चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देते; परन्तु लट, केंचुआ, चींटी-चींटें, मक्खी-मच्छर, पशु, पक्षी, मगरमच्छ, मछलियाँ आदि असंख्य अनन्त जीवों को तड़फते-छटपटाते, भयभीत हो इधर-उधर भागते-दौड़ते तो हम प्रत्यक्ष देखते ही हैं ह्न ये कर्मों के फल को ही तो भोग रहे हैं, कर्मों के अधीन ही तो हैं; फिर जन-जन व कण-कण की स्वतंत्रता कैसे संभव है?''

स्वतंत्रकुमार ने निवेदन किया ह्न ''इस समय आप मेरी समधिन नहीं, बल्कि गुरु हैं। यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि आप जैसी विदुषी से सम्बन्ध जुड़ने का मुझे सुअवसर मिला और जब से आप की बेटी ज्योत्स्ना जैसी बहू के पग मेरे घर में पड़े, तब से घर का वातावरण ही बदल गया। हमारा तो जीवन ही सफल हो गया। मैंने आपका प्रवचन बहुत ध्यान से सुना है, बहुत आनन्द आया; परन्तु कुछ प्रश्न मेरे मन में उठे हैं; यदि अभी असुविधा न हो तो ... अन्यथा जब आपको अनुकूलता हो, मैं तभी हाजिर हो जाऊँगा।''

समताश्री ने कहा ह्न ''स्वतंत्रजी ! ऐसी कोई बात नहीं, आप आये और मेरी बातों को ध्यान से सुना, इसके लिए आपको बहुत-बहुत साधुवाद ! इस काम के लिए कभी कोई असुविधा की बात नहीं है, सदैव सुविधा ही सुविधा है। आप जब पूछना चाहें, पूछें। मैं अपनी योग्यता के अनुसार आपकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयास करूँगी।

गणतंत्र और ज्योति भी आये हैं। आप सबका बहुत-बहुत स्वागत है। मैं चाहती थी कि ज्योति को घर-वर धर्म प्रेमी मिलें। मेरी भावना पूरी हुई ह्न यह देखकर मुझे बहुत हर्ष है। एतदर्थ आपको पुनः पुनः साधुवाद !''

स्वतंत्रकुमार ने पुनः पूछा ह्न '' जगत में छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कोई भी काम बिना कारण के तो होता नहीं, जो भी कार्य होता है, उसका कोई न कोई कारण तो अवश्य ही होता है, जब यह अकाट्य नियम है तो फिर यह क्यों कहा गया है कि ह्न 'परमाणु-परमाणु का परिणमन स्वतंत्र हैं, स्व-संचालित हैं, कोई भी किसी कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता नहीं है। क्या यह बात परस्पर विरोधी नहीं है?''

समताश्री ने बताया ह्न ''यद्यपि जगत में छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कोई भी काम बिना कारण के नहीं होता, जब भी जो कार्य होता है तो कार्य के पूर्व और कार्य के समय कोई न कोई कारण तो होता ही है ह्न यह बात तो निर्विवाद है; परन्तु यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि ह्न उन कारण-कार्य सम्बन्धों को मिलने-मिलाने की जिम्मेदारी किसी व्यक्ति विशेष की नहीं है। जब कार्य होता है, तब कार्य के अनुकूल सभी कारण स्वतः अपने आप ही मिलते हैं। चाहे वे काम अकृत्रिम हों, प्राकृतिक हों या कृत्रिम अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किए गये हों। जैसे ह्न पत्थर प्राकृतिक है और उसमें उकेरी गई, गढ़ी गई प्रतिमा कृत्रिम है, हीरा प्राकृतिक है और हीरे का हार कृत्रिम है; परन्तु पत्थर और प्रतिमा तथा हीरा और हार ह्न ये दोनों ही कार्य हैं, अतः उनके कारण भी नियम से हैं ही।

वह प्रतिमा और हार हमारी स्थूल दृष्टि में कृत्रिम हैं और पत्थर एवं हीरा अकृत्रिम नजर आते हैं; परन्तु उनके कारण-कार्य की सूक्ष्म दृष्टि से शोध-खोज करने पर हमें ज्ञात होगा कि उन सभी के एक नहीं पाँच-पाँच कारण दावेदार हैं। उदाहरणार्थ ह्न पत्थर को प्रतिमा बनने के संबंध में 1. पत्थर का **स्वभाव** कहता है कि 'यदि मैं नहीं होता तो प्रतिमा का अस्तित्व ही नहीं होता। अतः असली कारण तो मैं ही हूँ। 2. **पुरुषार्थ** कहता है ह्न यदि मैं प्रतिमा बनाने की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं करता तो प्रतिमा बनती कैसे? 3. **होनहार** का दावा है कि प्रतिमा बनने की होनहार या भवितव्य ही न होती तो प्रतिमा बन ही नहीं सकती थी। 4. **काललब्धि** कहती है ह्न जब प्रतिमा बनने का समय आयेगा तभी तो बनेगी, तुम लोगों की जल्दबाजी करने से क्या होगा? 5. **निमित्त** (कारीगर) कहता है मैं जब छैनी चलाऊँगा, तभी तो प्रतिमा बनेगी, कोई जादूगर का खेल तो है नहीं जो जादू से हथेली पर आम उगाने की भाँति बना दे।

पाँचों कारण अपना-अपना कर्तृत्व बताकर अहंकार करते हैं; पर ज्ञानी कहते हैं कि ह्न यद्यपि कारणों के बिना कार्य नहीं होता परन्तु जब काम उपादान में अपनी तत्समय की योग्यता से होना होता है, तभी होता है और पाँचों कारण अपनी योग्यतानुसार तब मिलते ही मिलते हैं और जब उपादान की तत्समय की योग्यता से कार्य रूप परिणमित नहीं हो तो एक भी कारण नहीं मिलता। अतः किसी को भी अभिमान करने की कोई गुंजाइश नहीं है। पत्थर की द्रव्य-गुण-पर्यायें पूर्ण स्वतंत्र है। उनमें अन्य द्रव्यों का अत्यन्ताभाव है। लोक की वस्तु व्यवस्था के अनुसार वस्तुओं (द्रव्यों) का न तो सामान्य अंश उपादान कारण होता है और न विशेष अंश, अपितु सामान्य-विशेषात्मक द्रव्य ही उपादान कारण होता है। इसके मूलत: दो भेद हैं 1. त्रैकालिक उपादान 2. तात्कालिक उपादान। तात्कालिक उपादान के भी दो भेद हैं, 1. अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय 2. तत्समय की योग्यता, तत्समय की योग्यता ही कार्य का असली कारण है।

अष्ट सहस्त्री ग्रन्थ के कर्त्ता आचार्य विद्यानंद ने इसी भाव को ध्यान में रखकर उपादान कारण को इस प्रकार परिभाषित किया है कि ह्न ''जो पर्याय विशिष्ट द्रव्य तीनों कालों में अपने रूप को छोड़ता हुआ भी नहीं छोड़ता है और पूर्व रूप से अपूर्व रूप में वर्तन करता है, वह उपादान है।''

उपर्युक्त कथन से सिद्ध है कि ह्न द्रव्य (वस्तु) का केवल सामान्य अंश व केवल विशेष अंश उपादान कारण नहीं होता, बल्कि दोनों अंशों से सहित द्रव्य (वस्तु) ही कार्य का उपादान कारण है।

''द्रव्य सत्स्वभावी है और सत् उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त है। ध्रौव्य द्रव्य शक्ति है और उत्पाद-व्यय पर्यायशक्ति है।

द्रव्यशक्ति के अनुसार कार्य का नियामक कारण त्रिकाली उपादान है

अतः इस अपेक्षा से सत्कार्यवाद का सिद्धान्त सही है; किन्तु केवल द्रव्यशक्ति के अनुसार कार्योत्पत्ति मानने पर कार्य के नित्यत्व का प्रसंग आता है। इस कारण वह कार्य का नियामक कारण नहीं है। तत्समय की योग्यतारूप पर्याय शक्ति ही कार्य का नियामक कारण है और वही पर्याय का कार्य है।

इस प्रकार वास्तविक कारण-कार्य सम्बन्ध एक ही द्रव्य की एक ही वर्तमान पर्याय में घटित होते हैं, उसी समय संयोग रूप जो उस कार्य के अनुकूल परद्रव्य होते हैं, उन्हें उपचार से निमित्त कारण कहा जाता है। अत: उक्त पाँचों कारणों के रहते हुए भी वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त निर्बाध है।''

स्वतंत्रकुमार ने पूछा ह्न ''उपादान कारणों में तत्समय की योग्यता रूप कारण की बात तो ठीक है; परन्तु निमित्त कारणों में जो प्रेरक निमित्तों की बात कही जाती है, क्या उनके कारण भी कार्य प्रभवित नहीं होता?

समताश्री ने बताया ह्न ''निमित्त कारण अपने से भिन्न उपादान के परिणमन में सहकारी अर्थात् सहचारी होने पर भी उसका किंचित्मात्र भी कर्ता नहीं है। उपादान कारण पूर्ण स्वतंत्र स्वाधीन व स्वशक्ति सामर्थ्य से युक्त है; क्योंकि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कार्य करने में पूर्णतः असमर्थ है। वस्तुतः उपादानकारण परिणमन शक्ति से रहित है वह कर्ता कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

एक कार्य के दो कर्त्ता कदापि नहीं हो सकते तथा एक द्रव्य युगपत्-एककाल में दो कार्य नहीं कर सकता। प्रत्येक द्रव्य अपना कार्य स्वतंत्ररूप से स्वयं ही करता है। स्वयं अपनी शक्ति से परिणमित होती हुई वस्तु में अन्य के सहयोग की अपेक्षा नहीं होती, क्योंकि वस्तु की शक्तियाँ पर की अपेक्षा नहीं रखतीं।

इस आधार से हम कह सकते हैं कि ह्न यदि उपादान कारण में स्वयं योग्यता न हो तो निमित्त उसे परिणमित नहीं करा सकता। विश्व की समस्त वस्तुएँ (द्रव्य) अपनी-अपनी ध्रुव व क्षणिक योग्यतारूप उपादान सामर्थ्य से भरपूर हैं। कहा भी है ह्न

कालादि लब्धियों से तथा नाना शक्तियों से युक्त द्रव्यों (वस्तुओं) को स्वयं परिणमन करने में कौन रोक सकता है?

कार्य की उत्पत्ति के समय तदनुकूल निमित्त उपस्थित अवश्य रहेंगे; किन्तु वे स्वयं शक्ति सम्पन्न उपादान को कार्यरूप परिणमित नहीं कराते। अतः एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के कार्य करने में पूर्णतः असमर्थ हैं, अकर्ता हैं। यही वस्तु की स्वतंत्रता है। स्वतंत्र वस्तु व्यवस्था में पर का किंचित् मात्र भी हस्तक्षेप नहीं है।

गणतंत्र ने पूछा ह्न 'निमित्तों को कर्त्ता मानने से क्या-क्या हानियाँ हैं ?'

उत्तर ह्न '1. निमित्तों को कर्त्ता मानने से उनके प्रति राग-द्वेष की उत्पत्ति होती है। 2. यदि धर्मद्रव्य को गति का कर्त्ता माना जायेगा तो निष्क्रिय आकाशद्रव्य को भी गमन का प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि वस्तुस्वरूप के विरुद्ध है। 3. यदि गुरु के उपदेश से तत्त्वज्ञान होना माने तो अभव्यों को भी सम्यग्ज्ञान की उत्पत्ति मानने का प्रसंग प्राप्त होगा। 4. निमित्तों को कर्त्ता मानने से सबसे बड़ी हानि यह है कि ह्न अनादि निधन वस्तुयें भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा में परिणमित होती हैं, कोई किसी के अधीन नहीं है। कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती। इसप्रकार वस्तुस्वातंत्र्य के मूल सिद्धान्त का हनन हो जायेगा।

अनेक आगम प्रमाण हैं, जिनसे निमित्तों का अकर्तृत्व सिद्ध होता है।

1. तीर्थंकर ऋषभदेव जैसे समर्थ निमित्त की उपस्थिति से भी मारीचि के भव में उपादान की योग्यता न होने से भगवान महावीर के जीव का कल्याण नहीं हुआ तथा महावीर स्वामी के दस भव पूर्व जब सिंह की पर्याय में उनके उपादान में सम्यग्दर्शन रूप कार्य होने की योग्यता आ गई तो निमित्त बिना बुलाये ही आकाश से उतर आये। 2. तीर्थंकर भगवान महावीर जैसे समर्थ निमित्त के होते हुए मंखलि गोसाल का कल्याण नहीं होना था सो ६६ दिन तक भगवान महावीर की दिव्यध्वनि की प्रतीक्षा करने के बावजूद भी जब दिव्यध्वनि खिरने का काल आया तब वह क्रोधित होकर वहाँ से चला गया। 3. नरकों में वेदना व जातिस्मरण को भी सम्यग्दर्शन का निमित्त कह दिया है। इससे सिद्ध होता है कि निमित्त कर्त्ता नहीं है; क्योंकि वेदना तो सबको होती है, फिर सम्यग्दर्शन सबको क्यों नहीं होता? 4. केवली का पादमूल तो बहुतों को मिला, पर सबको क्षायिक सम्यक्त्व नहीं हुआ। 5. शील के प्रभाव से यदि अग्नि का जल हो जाने का नियम हो तो पाण्डवों के शील की क्या कमी थी ? उनके तो अठारह हजार प्रकार का शील था। फिर भी वे क्यों जल गये ? उनके हाथ-पैरों में पहनाये गये दहकते लोहे के कड़े ठंडे क्यों नहीं हुए ?''

स्वतंत्र ने पूछा ह्न निमित्तों में कर्त्तापने के भ्रम होने के क्या कारण हैं ?

समताश्री ने कहा ह्न ''भ्रम उत्पन्न होने का मूल कारण तो कर्त्ता-कर्म संबंधी भूल ही है। इसके अतिरिक्त ह्न 1. निमित्त कारणों का कार्य के अनुकूल होना, 2. निमित्तों की अनिवार्य उपस्थिति, 3. निमित्तों का कार्य के सन्निकट होना, 4. आगम में निमित्त प्रधान कथनों की बहुलता, 5. निमित्त-नैमित्तिक संबंधों की घनिष्ठता, 6. कृतज्ञता ज्ञापन की प्रवृत्ति, 7. प्रेरक निमित्तों की अहंभावना, 8. अनादिकालीन परपदार्थों में कर्तृत्वबुद्धि आदि भी भ्रम उत्पन्न करते हैं, 9. जो निमित्त उपादान के पूर्वचर, उत्तरचर एवं सहचर होते हैं, उन निमित्तों में भी सहज ही कर्त्तापन का भ्रम हो जाता है।''

ज्योत्स्ना ने पूछा ह्न ''निमित्तों में कर्त्तापन के भ्रम को मेटने का मुख्य उपाय क्या है ?''

समताश्री ने कहा ह्न भ्रम से उत्पन्न हुई परपदार्थों में कर्तृत्वबुद्धि को मेटने का उपाय भ्रम को दूर करना ही है। जो जिनागम में प्रतिपादित निमित्तों के अकर्तृत्व के सिद्धान्त को भली-भाँति समझने एवं उसमें श्रद्धावान होने से ही दूर हो सकता है। एतदर्थ जिनागम का अध्ययन-मनन-चिंतन करना आवश्यक है।

जिनागम में चारों अनुयोगों में इसप्रकार के उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनसे निमित्तों का अकर्तृत्व सिद्ध होता है और यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि ह्न परद्रव्यरूप निमित्त आत्मद्रव्य के परिणमनरूप कार्य में सर्वथा अकर्त्ता हैं। वे आत्मा के सुख-दुःख, जीवन-मरण आदि में कुछ भी सहयोग-असहयोग नहीं कर सकते।

जिन्होंने अपने विवेक से मन-मस्तिष्क को खुला रखकर आगम चक्षुओं से वस्तुस्वरूप को निरखा-परखा है, वे उपर्युक्त भ्रमोत्पादक कारणों के विद्यमान रहते हुए भी भ्रमित नहीं होते। उन्हें शीघ्र सन्मार्ग मिल जाता है।

आचार्य अमृतचन्द्र प्रवचनसार गाथा ८७ की टीका में लिखते हैं कि 'जीव के किए हुए रागादि परिणमों का निमित्त पाकर नवीन-नवीन अन्य पुद्गल स्कन्ध स्वयमेव ज्ञानावरणादि कर्मरूप परिणमित हो जाते हैं। जीव इन्हें कर्मरूप परिणमित नहीं करता।'

तात्पर्य यह है कि जीव की तत्समय की योग्यता रूप उपादान-कारण से ही कार्य होता है; क्योंकि द्रव्य या पदार्थ स्वयं परिणमनस्वभावी हैं। उन्हें अपने परिणमन में परद्रव्यरूप निमित्तों की अपेक्षा नहीं होती।

इस प्रकार प्रवचनोपरांत स्वतंत्रकुमार, गणतंत्रकुमार और ज्योत्स्ना के शंका-समाधान के साथ सभा विसर्जित हुयी। ●

दशलक्षण महापर्व के पावन प्रसंग पर धर्मप्रभावना हेतु कौन-कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है। यद्यपि पर्यूषण पर्व 08 सितम्बर से प्रारम्भ होगें; अभी पर्व प्रारंभ होने में काफी समय शेष है; फिर भी दिनांक 10 अगस्त 2005 तक हमारे पास 407 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 08 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 309 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 169 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ।

विशिष्ट विद्वान ह्न **1.कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2.अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पं. रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, **4.इन्दौर (माणक चौक):** पं.पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, **5.हुबली :** ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, **6.मुम्बई (बोरिवली) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, **7.विदिशा (किला अन्दर) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **8.कोलकाता (पद्मोपुकुर) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, **9.उदयपुर (से 11) :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना, **10.सागर (गौरमूर्ति) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना, **11.सिलवानी :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, **12. पोन्नूरधाम :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम'देवलाली, **13. मुम्बई (भायन्दर वेस्ट) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **14.जयपुर :** पं. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, **15.मुम्बई (सीमन्धर जिनालय) :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **16. नागपुर (इतवारी) :** पं. राजेंद्रकुमारजी जबलपुर, **17. कोटा (रामपुरा) :** पं. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **18.अलीगढ (शहर) :** पं. अशोककुमारजी लुहाडिया,अलीगढ़।

विदेश ह्न **1.लंदन :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **2.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, **3.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न **1.सागर (मकरोनिया) :** पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर, **2.भोपाल (कोहेफिजा) :** विदुषी कल्पनाजी जैन सागर, **3.भिण्ड (देवनगर) :** पं. कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर, **4.उज्जैन :** पं.जयकुमारजी बारां, **5.गुना (मुमुक्षु मण्डल) :** विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा, **6. इन्दौर (न्यू पलासिया) :** पं. सुबोधकुमारजी सिंघई सिवनी, **7.अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. देवेन्द्रजी सिंगोडी, **8.बेगमगंज :** पं.कैलाशचन्दजी इन्दौर, **9.बैडियाँ :** पं.बाबूलालजी बांझल गुना, **10.टीकमगढ :** पं. सतीशचन्दजी जैन महिदपुर, **11.छिन्दवाडा :** पं. धनसिंहजी पीड़ावा, **12.गुना (शांति. मन्दिर) :** पं.गुलाबचन्दजी भोपाल, **13.भोपाल (चौक):** पं. सुरेन्द्रजी पंकज छिन्दवाड़ा, **14.करेली :** पं. कमलेशकुमारजी मौ, **15.भिण्ड (परमागम) :** पं.शिखरचन्दजी विदिशा, **16.इन्दौर (साधनानगर) :** पं. अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, **17.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पं. गुलाबचन्दजी बीना, **18.सिवनी :** पं.सौरभजी जैन फिरोजाबाद, **19.दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **20.मंदसौर (गौतमनगर) :** पं. हुकमचन्दजी राघौगढ़, **21.बीना :** पं. सुदीपजी जैन बीना, **22.इन्दौर (देवास रोड) :** पं. सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, **23.इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.मधुकरजी जलगाँव, **24.रतलाम (स्टेशन रोड) :** पं. भंवरलालजी जैन कोटा, **25.रतलाम (तोपखाना) :** पं. मनोजजी जैन करेली, **26.पथरिया :** पं. भागचंदजी जैन पथरिया, **27.बावनगजा सिद्धक्षेत्र :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर **28.ग्वालियर (मु.मण्डल) :** विदुषी राजकुमारीजी जयपुर, **29.जबलपुर :** पं. मनीषकुमारजी शास्त्री रहली, **30.द्रोणगिरि :** पं.राजमलजी भोपाल, **31.दुर्ग :** पं. अश्विनजी नानावटी, **32.आरोन :** पं.मांगीलालजी कोलारस, **33.अशोकनगर :** पं. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, **34.खनियांधाना :** पं. कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, **35.खुरई :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **36.शाहगढ़ :** पं. सरदारमलजी बेरसिया, **37.महिदपुर :** पं. दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, **38. गौरझामर :** पं सतीशचन्दजी पिपरई, **39.पथरिया (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पं. कुंदनमलजी पथरिया, **40.मौ :** पं. जगदिशसिंहजी पंवार उज्जैन, **41.ऊन पावागिरि :** पं. राजुभाई कानपुर, **42.रीवा :** पं.मनीषजी शास्त्री बरेली, **43.रांझी (जबलपुर) :** पं. ऋषभकुमारजी ललितपुर, **44.बडनगर :** पं. अनिलजी पाटोदी बड़नगर, **45.केसली :** पं.निर्मलजी सागर, **46.ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. महेशचंदजी जैन ग्वालियर, **47.गोरमी :** पं. बाबूलालजी पल्लिवाल गुना, **48.शहडोल :** पं.नन्हेलालजी सागर, **49.बंडा बेलई :** पं. अरूणकुमारजी लालोनी अशोकनगर,**50.गढ़ाकोटा :** पं.रोन्द्रजी जैन पिपरई, **51.मन्दसौर (नई आबादी) :** पं. रूपचन्दजी जैन बण्डा, **52.गोहद :** पं.नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, **53.जबेरा :** विदुषी ब्र. सुधाबहनजी छिन्दवाड़ा, **54.लुहारदा :** पं. आकेशजी छिन्दवाड़ा, **55.विजयपुर :** पं. अशोकजी मांगूलकर राधौगढ़, **56.बीना :** पं. मोतीलालजी जैन बीना, **57.निसई (तारणतरण) :** पं. मनोजजी खडैरी, **58.सनावद :** पं.विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, **59.शुजालपुर मण्डि :** पं. सुदीपजी बरगी, **60. सागर (तारण तरण) :** पं. अंकुरजी शास्त्री देहगाँव, **61.जावरा :** पं.हीरालालजी गंगवाल, **62.इन्दौर :** पं. गौरवजी जैन चन्देरी **63.कालापीपल :** पं.महेन्द्रजी सेठी, **64. टीकमगढ़ :** पं. अरुणकुमारजी जैन, **65. अशोकनगर :** पं. अमोलकचन्दजी जैन, **66. उज्जैन :** पं. बेलजीभाई शाह, **67.कर्रापुर :** पं. धनप्रसादजी जैन, **68.बण्डा :** पं. कपूरचन्दजी भाईजी, **69.खनियांधाना :** पं. ताराचन्दजी जैन, **70.बदरवास :** पं. अभयकुमारजी जैन, **71.घोडाडूंगरी :** पं. सुरेशचन्दजी जैन, **72. भोपाल :** पं. अनुरागकुमारजी बडकुल, **73.भोपाल :** पं.राजमलजी पवैया, **74.ग्वालियर :** पं. अजितजी जैन, **75.भोपाल :** पं. अभिषेकजी सिलवानी, **76.निसई (तारण–तरण) :** पं.कपूरचन्दजी समैय्या, **77.कटनी :** पं.संतोषजी जैन शास्त्री, **78.ग्यारसपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री, **79.लोहारदा :** पं. छगनलालजी जैन, **80.सिवनी :** पं. कपूरचन्दजी भारिल्ल, **81.ग्वालियर :** पं. धनेन्द्रजी सिंघल, **82.ग्वालियर :** पं. सुनीलजी जैन, **83.खैरागढ़ :** पं. दुलीचन्दजी जैन, **84.सिवनी :** पं. शिखरचन्दजी जैन, **85.बीना :** पं. राजेशजी जैन, **86.अशोकनगर :** पं.विमलजी जैन, **87.अमरपाटन :** पं.राजेन्द्रजी जैन, **88.पथरिया :** पं. नेमीचन्दजी जैन, **89.भोपाल (चौक) :** पं.महेशजी गुढ़ा, **90.छतरपुर :** पं. नेमीचन्दजी जैन।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न **1.नातेपुते :** ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, **2.मुम्बई (मलाड) :** पं.रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **3.मुम्बई (दादर) :** पं.शैलेषभाई शाह तलोद, **4.मुम्बई (घाटकोपर) :** पं. मेहूलजी मेहता कोलकाता, **5.मुम्बई (भूलेश्वर) :** पं. रमेशचन्दजी जैन जयपुर, **6.मुम्बई (दादर–मारवाडी) :** पं. संजयकुमारजी जैन अलीगढ़, **7.पुणे (स्वा. भवन) :** पं.राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, **8.औरंगाबाद :** विदुषी आशाजी जैन मलकापुर, **9.हिंगोली :** पं. सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, **10.मुम्बई :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **11.कारंजा**

(लाड) : सुरेशजी सिंघई भोपाल, 12.**देवलगाँवराजा :** देवीलालजी आंबेकर चिखली, 13.**मलकापुर :** पं. महेन्द्रजी भिण्ड, 14.**पुसद :** पं. जीवराजजी जैन नासिक, 15.**वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पं.सुरेशजी टीकमगढ़, 16.**गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं. केशवरावजी डबरे नागपुर, 17.**वसमतनगर (महावीर मन्दिर):** पं. नेमीचन्दजी महाजन, 18.**मुम्बई (भायन्दर पूर्व) :** पं.भरतेशजी पाटील पुणे, 19.**कोल्हापुर :** पं. विक्रान्तजी शाह सोलापुर, 20.**वसगडे :** चन्दनमलजी शाह नातेपुते, 21.**मुम्बई (दहिसर) :** पं.मनोजजी जबलपुर, 22.**पंढरपुर:** पं.फूलचन्दजी मुक्किरवार हिंगोली, 23.**पंढरपुर :** विदुषी मंजुषाजी मुक्किरवार हिंगोली, 24.**चिखली** : पं.दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 25. **शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले, 26.**मुम्बई (वसई) :** विदुषी चेतनाबेन देवलाली, 27.**कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई, 28.**मुम्बई (डोंबिवली) :** पं. ज्ञायकजी जैन राजकोट 29.**देवलाली :** डॉ. मानमलजी जैन कोटा, 30.**मुम्बई (अणुशक्तिनगर) :** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर, 31.**मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, 32.**मुम्बई :** विदुषी स्वानुभूति जैन 33.**जिंतुर :** विजयजी राऊत रीठद, 34.**मुम्बई(एवरशाइननगर):** पं.विपिनजी शास्त्री, 35.**मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री मुम्बई, 36.**मुम्बई :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 37.**पानकन्हेरगाँव :** पं. अशोकजी मिरकुटे, 38.**सोलापुर (कासार मन्दिर) :** पं.विजयजी कालेगोरे, 39.**सोलापुर (बुवणे मन्दिर) :** पं.रवीन्द्रजी काले कारंजा, 40.**परभणी :** पं.मनोहरजी मारवडकर नागपुर, 41.**औरंगाबाद :** पं. कल्याणमलजी गंगवाल, 42.**नागपुर :** पं.मधुकरजी गडेकर, 43.**एलोरा:** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर, 44.**एलोरा :** पं.प्रदीपजी माद्रप, 45. **जिंतूर :** पं.नरेन्द्रजी वानरे, 46.**वर्धा :** पं.राजेन्द्रजी भागवतकर, 47.**रामटेक :** पं.गेंदालालजी जैन, 48.**सेलू :** पं. अशोकजी वानरे, 49. **हिंगोली :** पं. पद्माकरजी दोडल 50.**हिंगोली :** पं. जयकुमारजी दोडल 51.**सांगली :** पं.महावीरजी पाटील, 52. **लोणावला :** पं.गोकुलचन्दजी जैन, 53.**देवलगांवराजा :** पं. विजयकुमारजी आह्वाने, 54.**देवलगांवराजा :** पं.उमाकांतजी बंड, 55.**जयसिंहपुर :** पं.पार्श्वनाथजी कुगे, 56.**कन्नड :** पं.सचिनजी पाटनी, 57.**हिंगोली :** पं.अमोलजी संघई, 58. **कारंजा (लाड):** पं. आलोकजी शास्त्री, 59. **नवागड़ :** पं. संतोषजी उखलकर, 60. **मुंबई :** पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 61. **अकोला :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, 62. **नातेपुते :** पं. शीतलचंदजी दोशी, 63. **कचनेर :** पं. संजयजी राऊत, 64. **औरंगाबाद :** पं. विशालजी कान्हेड, 65. **सेनगांव :** पं. किरणजी उखलकर।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**हिम्मतनगर :** पं. राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 2.**राजकोट :** पं. सुशीलकुमारजी राघौगढ़, 3.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, 4.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 5.**अहमदाबाद (बापूनगर) :** पं. सुकुमालजी जैन कोलारस, 6.**अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन, 7.**अहमदाबाद(मेघाणीनगर) :** विदुषी पुष्पलताजी झांझरी उज्जैन, 8.**अहमदाबाद (न्यू जैन मिलन) :** पं.मांगीलालजी कुरावली, 9.**अहमदाबाद (नारायणनगर) :** पं. सुरेशजी जैन गुना, 10.**अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. महेंद्रजी सागर, 11.**तलोद :** पं.अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, 12.**दाहोद :** पं. विनोदकुमारजी जैन गुना, 13.**रखियाल :** पं. अश्विनभाई जैन मुंबई,14.**वापी :** डॉ. महावीरप्रसादजी जैन टोकर, 15. **बड़ोदरा :** पं. सौरभजी शास्त्री इन्दौर, 16. **मोरबी :** पं. समकितजी शास्त्री सिलवानी, 17. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** कु. अनुप्रेक्षाजी जैन मुंबई, 18. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. अनेकांतजी भारिल्ल मुंबई, 19. **राजकोट :** पं. बृजलालजी अजमेरा, 20. **मोरबी :** पं. इंदुभाई सिंघई, 21. **अहमदाबाद :** पं. नवीनजी जैन।

उत्तरप्रदेश प्रान्त ह्न 1.**आगरा (नमकमंडी) :** पं. चंदुभाई फतेपुर, 2.**ललितपुर :** पं. श्रेणिकजी जबलपुर, 3. **खतौली :** पं. लालारामजी साहू, 4. **मुजफ्फरनगर :** पं. अजितजी जैन मड़ावरा, 5. **मेरठ (तीरगरान) :** पं. प्रकाशदादा मैनपुरी, 6. **कानपुर (सर्राफा) :** पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, 7. **फिरोजाबाद :** पं. महेशचंदजी कानपुर, 8. **बड़ौत :** पं. नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, 9.**मंगलायतन (अलीगढ़) :** पं. देवेंद्रकुमारजी बिजौलिया, 10. **जसवंतनगर :** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा, 11.**करहल :** पं. गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, 12. **धामपुर :** पं. रमेशचंदजी जैन करहल, 13. **रामपुर मणिहारन :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी वीर फिरोजाबाद, 14. **झाँसी:** पं. मुरारीलालजी नरवर, 15. **सरहानपुर** : पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर, 16. **मैनपुरी :** पं. नेमीचंदजी जैन ग्वालियर, 17.**शेरकोट :** पं. प्रदीपजी धामपुर,18. **रूड़की :** पं. अजितजी जैन फिरोजाबाद, 19. **सासनी :** पं. सुधीरजी जबलपुर, 20. **मड़ावरा** : पं. मनोजजी मुजफ्फरनगर, 21. **कुरावली :** पं.विकासजी जैन मौ, 22. **कानपुर (किदवईनगर) :** पं. विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, 23. **शिकोहाबाद** : पं. रवीजी ललितपुर, 24. **सुलतानपुर :** पं. प्रशांतकुमारजी मोहरे शास्त्री सोलापुर, 25.**बानपुर :** पं. देवेंद्रजी अकाझिरी, 26.**ललितपुर :** पं.भानुकुमारजी शास्त्री, 27.**खतौली :** पं.सोनूजी शास्त्री, 28.**सुलतानपुर :** पं. देवचन्दजी जैन, 29. **खतौली :** पं.कल्पेंद्रजी जैन, 30.**शामली :** पं. सलेकचन्दजी जैन।

राजस्थान प्रान्त ह्न 1.**उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, 2. **उदयपुर (केशवनगर) :** पं. कमलचंदजी पिड़ावा, 3.**उदयपुर (गायरियावास) :** पं.प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन, 4.**अजमेर :** पं.कस्तूरचंदजी विदिशावाले भोपाल, 6.**पिडावा :** पं.संजयकुमारजी इंजी. खनियांधाना, 7.**अलवर :** डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, 8.**भीण्डर :** पं. तेजकुमारजी गंगवाल इंदौर, 9.**किशनगढ :** पं.नागेशजी जैन पिड़ावा, 10.**उदयपुर (नेमिनाथ) :** पं.शीतलजी पांडे उज्जैन, 11.**भीलवाडा :** पं.पदमकुमारजी अजमेरा रतलाम, 12.**बिजौलियाँ :** पं.भोगीलालजी भदावत उदयपुर, 13.**उदयपुर (सन्मति भवन) :** पं.अरविंदजी शास्त्री सुजानगढ़, 14.**चित्तौडगढ़ :** पं.विमलचंदजी लाखेरी, 15.**प्रतापगढ़ :** पं. सुनीलजी जैन, 16.**पीसांगन :** पं. धरमचंदजी जैन जयथल, 17.**निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी नाके, 18.**उदयपुर (प्रभातनगर) :** पं.योगेशजी शास्त्री बरा, 19.**डबोक :** पं.गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 20.**अलीगढ़ :** पं. मीठालालजी जैन कलिंजरा, 21.**कोटा (इंद्रविहार) :** पं.सचिनजी शास्त्री बरेली, 22.**अजमेर :** पं.सुनीलजी धवल भोपाल, 23.**लूणदा :** पं.चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, 24.**डूंगरपुर (पत्रकार कालोनी) :** पं.लखमीचंदजी जैन, 25.**तालेड़ा :** पं. मोहनलालजी केशवरायपाटन, 26.**बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, 27.**बाँसवाड़ा:** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, 28.**नौगाँव :** पं.धर्मेशजी शास्त्री रैयाना, 29 **अलवर :** प्रेमचंदजी जैन, 30.**किशनगढ :** पं.पवनजी शास्त्री, 31.**विजयनगर :** पं.शकुनराजजी लोढ़ा, 32.**प्रतापगढ़ :** पं.सज्जनलालजी सांवरिया, 33.**रूपाहेडीकलां :** पं.पद्माकरजी मंजूले, 34.**बस्सी :** पं.कृष्णचन्दजी शास्त्री भिण्ड, 35.**बांरा :** पं.संजीवजी शास्त्री, 36.**शाहबाद :** पं.भगवतीप्रसादजी शास्त्री, 37.**टामटिया :** पं. प्रमोदजी जैन, 38. **भैसरोडगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री 39.**नौगामा :** पं.शीतलजी शास्त्री, 40.**कुचामनसिटी :** पं.जयप्रकाशजी गाँधी, 41.**भीण्डर :** पं.छोगामलजी जैन, 42.**भरतपुर :** पं.अरूणजी बण्ड,

(शेष पृष्ठ 8 पर ....)

प्रवचनसार का सार

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

अब, आचार्य समन्तभद्र ने यह कहा है कि ह्न तत्त्व त्रयात्मक है; इसलिए भंग सात बनते हैं।

पयोव्रतो न दध्यत्ति, न पयोत्ति दधिव्रतः।
अगोरसव्रतो नोभे, तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम्।।

जिसके ऐसा व्रत हो कि मैं आज दूध ही लूँगा, वह दही नहीं खाता है; जिसके ऐसा व्रत हो कि मैं आज दही ही लूँगा, वह दूध नहीं लेता है। जिस पुरुष के गोरस न लेने का व्रत है, वह दोनों ही नहीं लेता है ह्न इसप्रकार तत्त्व त्रयात्मक है।

घड़ा नष्ट हुआ और कपाल पैदा हुआ तथा उन दोनों में मिट्टी कायम रही। इसीप्रकार सोने के बाजूबन्द हैं; उन्हें तोड़कर कुण्डल बनाएँ ह्न इन दोनों स्थितियों में स्वर्ण कायम है। ऐसी स्थिति होने पर जिसे बाजूबन्द प्रिय था, उसे शोक होता है एवं जिसे कुण्डल प्रिय था, उसे हर्ष होता है तथा जिसे सोना प्रिय था, वह माध्यस्थभाव में रहता है।

इसे आचार्य समन्तभद्र ने इसप्रकार स्पष्ट किया है ह्न

घट-मौलि-सुवर्णार्थी, नाशोत्पादस्थितिष्वयम्।
शोक-प्रमोद-माध्यस्थ्यं, जनो याति सहेतुकम्।।

घट, मुकुट और स्वर्ण चाहनेवालों को घट के नाश, मुकुट के उत्पाद और स्वर्ण के कायम रहने पर क्रमशः शोक, प्रमोद एवं माध्यस्थ भाव का अनुभव निष्कारण नहीं होता।

इसप्रकार तत्त्व त्रयात्मक है और जहाँ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य ह्न ये तीनों हैं, वहाँ सात भंग बनेंगे। हर्र, बहेरा और आँवला ये तीन चीजें हैं। इन तीन चीजों के अधिक से अधिक सात प्रकार के चूर्ण बन सकते हैं। तीन अंसयोगी, तीन द्विसंयोगी और एक त्रिसंयोगी। तीनों का अलग-अलग चूर्ण बना सकते हैं ह्न इसप्रकार तीन चूर्ण बनते हैं। अब द्विसंयोगी चूर्ण बनायेंगे तो भी तीन प्रकार के ही चूर्ण बनेंगे। तीनों में से किन्हीं दो मिलाकर बनाने पर तीन ही बनते हैं और त्रिसंयोगी भंग में तीनों ही मिलाने होंगे। इससे सात प्रकार के चूर्ण बन जाते हैं।

हर्र, बहेरा और आँवला ह्न इन तीन पदार्थों की यदि मात्रा अल्प-अधिक कर दो तो अगणित चूर्ण बन सकते हैं; परंतु मात्रा बराबर रखो तो सात ही बनेंगे।

यह तो आप जानते ही हैं कि जैनदर्शन में सप्तभंगी के साथ-साथ अनंतभंगी भी होती हैं। तात्पर्य यह है कि अनन्त सप्तभंगियाँ होती हैं। एक भाव-अभाव संबंधी सप्तभंगी, एक नित्य-अनित्य संबंधी सप्तभंगी आदि अनंत सप्तभंगियाँ होती हैं, हो सकती हैं; क्योंकि प्रत्येक वस्तु में अनंत धर्मयुगल हैं।

इसी में एक वक्तव्य-अवक्तव्य संबंधी सप्तभंगी भी होती है। इसमें यह विचार अपेक्षित होता है कि वस्तुस्वरूप को हम बता सकते हैं या नहीं अर्थात् वह वक्तव्य है या अवक्तव्य ? जिनवाणी इसमें कथंचित् वक्तव्य और कथंचित् अवक्तव्य ह्न ऐसा कहकर स्याद्वाद् के भंग उपस्थित करती है।

हम किसी डॉक्टर के पास जाते हैं और उनसे कहते हैं कि डॉक्टर साहब! मेरे पेट में दर्द है, जब डॉक्टर पूछते हैं कि कैसा है ? कितना है? तो कहते हैं कि बहुत है; पर कह नहीं सकते हैं। अभी जो जैसा दर्द है, जितना दर्द है; वह मेरे कहने में नहीं आ रहा है; इसलिए ये कह रहा हूँ कि कह नहीं सकता, पर इतना तो यहाँ कहा ही जा रहा है कि ह्न 'इतना दर्द है कि कह नहीं सकता हूँ।'

डॉक्टर ने सुई उँगली में चुभाई और पूछा कि ह्न 'कितना दर्द है ?' तब कहते हैं कि ह्न 'बहुत दर्द है।' फिर जोर से चुभाई और पूछा कि कितना दर्द है ? तब कहते हैं कि ह्न बहुत दर्द है। उस सुई चुभाने से लेकर उँगली काट देने तक के दर्द की मात्रा में अंतर तो है; पर उस अंतर को बताया नहीं जा सकता है, इसलिए हम कहते हैं कि ह्न 'इतना दर्द है कि कहा नहीं जा सकता है।' और 'दर्द है' 'बहुत दर्द है' यह कहा जा रहा है। यही कारण है कि वस्तु को कथंचित् वक्तव्य कहा जाता है एवं कथंचित् अवक्तव्य कहा जाता है।

अब, यदि वक्तव्य अर्थात् कह सकते हैं तो क्या कह सकते हैं ? कह सकनेवाले तीन बिन्दु ह्न 'है' 'नहीं है' और दोनों। जैसे ह्न 'नित्य है' 'नित्य नहीं है' और 'नित्यानित्य है।' ऐसे ही ह्न 'भिन्न है' 'भिन्न नहीं है' और 'भिन्नाभिन्न है।' इसप्रकार वक्तव्य के तीन भंग हुए। 'बिल्कुल ही नहीं कह सकते।' यह चौथा अवक्तव्य भंग हुआ। अस्ति नहीं कह सकते हैं, नास्ति नहीं कह सकते हैं और दोनों नहीं कह सकते ह्न ये तीन भंग, कुल मिलाकर अवक्तव्य के चार भंग हुए। वक्तव्य के तीन भंग और अवक्तव्य के चार भंग इसप्रकार सात भंग होते हैं।

वक्तव्य के भंग के साथ 'वक्तव्य' शब्द नहीं लगता है; परंतु 'अवक्तव्य' के भंग के साथ 'अवक्तव्य' शब्द लगता है। वक्तव्य के साथ इसलिए नहीं लगता है; क्योंकि वह कहा जा रहा है। जब कहा ही जा रहा है तो फिर 'मैं कह रहा हूँ।' ह्न ऐसा कहने की क्या जरूरत है; परंतु यदि नहीं कहना है तो 'मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगा' - ऐसा कहने की जरूरत है।

जैसे ह्न मैंने आपसे पूछा कि दो और दो कितने होते हैं ? तब यदि आपको उत्तर देना है तो आपके बोल होते हैं - चार। यहाँ मैं उत्तर देता हूँ; ऐसा कहने की जरूरत नहीं है; परंतु यदि आपको उत्तर नहीं देना है तो आपके बोल होते हैं कि - 'मैं कुछ नहीं बोलूँगा' अर्थात् अवक्तव्य ऐसा कहने की आवश्यकता रहती है; परंतु यदि उत्तर देना है तो वक्तव्य ऐसा कहने की आवश्यकता नहीं रहती है।

इसप्रकार (१) स्याद् अस्ति, (२) स्याद् नास्ति, (३) स्याद् अस्ति-नास्ति ह्न ये तीन वक्तव्य के भंग हैं और (४) स्याद् अवक्तव्य, (५) स्याद् अस्ति अवक्तव्य, (६) स्याद् नास्ति अवक्तव्य, (७) स्याद् अस्ति-नास्ति अवक्तव्य ह्न ये चार अवक्तव्य के भंग हैं।

आचार्य समन्तभद्र ने आप्तमीमांसा, कारिका-१०८ में स्पष्ट किया है कि ह्न **'निरपेक्षा नया मिथ्या सापेक्षा वस्तुतेऽर्थकृत्** ह्न निरपेक्ष नय मिथ्या होते हैं और सापेक्ष नय सम्यक् और सार्थक् होते हैं।'

नयों की चर्चा के समय कोई ऐसा भी कहता है कि नय लगा देने से अथवा अपेक्षा लगा देने से बात ढीली पड़ जाती है।

अरे भाई ! गजब करते हो ! जैनदर्शन के अतिरिक्त विश्व में अन्य किसी भी दर्शन में नय और अपेक्षा नाम की चीज नहीं है। यह जैनदर्शन की

ही अद्भुत निधि है, जो विश्व में अन्यत्र कहीं भी नहीं है। जैनदर्शन का न्यायशास्त्र और न्याय के प्रकांड विद्वान् अकलंकादि आचार्य जीवनभर सम्पूर्ण सामर्थ्य से नयप्रकरण को ही सिद्ध करने में लगे रहे, समर्पित रहे; क्योंकि नय के बिना वस्तु की सिद्धि हो ही नहीं सकती है। नय के बिना एक वाक्य बोलना भी संभव नहीं है।

आचार्यों ने यह कहा है कि नयों के बिना, अपेक्षा के बिना; जो भी कहें, वह मिथ्या ही होगा। निरपेक्ष नय मिथ्या है और सापेक्षनय वस्तु की सिद्धि करनेवाले हैं। इसलिए आचार्यदेव ने अपेक्षा रहित एवकार के प्रयोग को जहरीला कहा है। 'आत्मा नित्य ही है' ह्न इसमें अपेक्षा नहीं है तो यह प्रयोग जहरीला है।

इसे ही ध्यान में रखकर आचार्य समन्तभद्र ने आप्तमीमांसा में १५वीं कारिका को प्रस्तुत किया ह्न

सदेव सर्वं को नेच्छेत्, स्वरूपादि चतुष्टयात्।
असदेव विपर्यासान्न, चेन्न व्यवतिष्ठते ।।

ऐसा कौन है जो सभी पदार्थों को स्वरूपादि चतुष्टय की दृष्टि से सत् और पररूपादिचतुष्टय की दृष्टि से असत् रूप ही अंगीकार न करे ? यदि कोई ऐसा नहीं मानता है तो उसकी बात सत्य नहीं है।

आचार्यदेव ने यहाँ यह कहा है कि स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव की दृष्टि से वस्तु को सत् नहीं माननेवाला और परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल और परभाव से वस्तु को असत् नहीं माननेवाला जैन नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि अस्तिवाला भंग स्वरूपचतुष्टय की अपेक्षा से है एवं नास्तिवाला भंग पररूपचतुष्टय की अपेक्षा से है।

जिसका स्वरूप से और पररूप से युगपत् कथन अशक्य है; वह अवक्तव्य है। भाई ! एकसाथ दोनों का कथन कैसे संभव है ? जब 'है' बोलेंगे तब 'नहीं है' नहीं बोल सकते हैं और जब 'नहीं है' बोलेंगे तो 'है' नहीं बोल सकते हैं।

वस्तु में दोनों धर्म एकसाथ रहते हैं और वस्तु में दोनों धर्मों के एकसाथ रहने में कोई समस्या भी नहीं है। समस्या उनके कथन में है; इसलिए कहने में क्रम पड़ता है। **(क्रमशः)**

पाठशाला निरीक्षण

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर द्वारा दिनांक 15 जुलाई से 07 अगस्त, 2005 तक उत्तरप्रदेश प्रान्त में संचालित वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं में खेकड़ा, मेरठ, खतौली, मुजफ्फरनगर, देवबन्द, सरहानपुर, सुलतानपुर, नकुड, रामपुर मणिहारन, धामपुर, आगरा, एत्मादपुर, फिरोजाबाद, सिरसागंज, शिकोहाबाद, इटावा, जसवन्तनगर, करहल, भोगाँव, कुरावली, एटा, रूड़की आदि लगभग 25 स्थानों का निरीक्षण किया गया।

सभी स्थानों के विद्यार्थियों को श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर के ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये प्रेरित किया गया तथा बंद पाठशालाओं को पुनर्स्थापित कर उनके संचालन के लिये योग्य निर्देश दिये। अधिकांश स्थानों पर आपके प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मप्रभावना हुयी। ह्न **ओमप्रकाश आचार्य**

(28 वाँ शिक्षण शिविर ... पृष्ठ 1 का शेष ...)

पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जैन द्वारा **क्रमबद्धपर्याय**, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा **परमभावप्रकाशक नयचक्र**, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री द्वारा **प्रमाणज्ञान** विषय पर कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ मिला।

प्रातः 5.30 बजे प्रौढ़ कक्षायें ह्न ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि द्वारा ली गई।

दोपहर की व्याख्यान माला में डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़ के विविध विषयों पर प्रवचन हुए।

गोष्ठी ह्न सोमवार, 8 अगस्त को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा., जयपुर के छात्रों द्वारा **आचार्य कुन्दकुन्द और उनका समयसार** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता पण्डित धनसिंहजी जैन पिड़ावा ने की तथा विशिष्ट अतिथि श्री महीपालजी जैन बांसवाड़ा थे। संचालन संभव जैन तथा संयोजन स्वतंत्र जैन व कमलेश जैन ने किया तथा सिद्धायतन-द्रोणगिरि से आये छात्रों ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया; जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के बालकों का सराहनीय प्रदर्शन रहा।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन ह्न रविवार, 7 अगस्त 2005 को दोपहर में ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन सम्पन्न हुआ; जिसकी अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा ने की। सभा का उद्घाटन श्री रमेशचन्दजी कोदरलालजी दोशी सुधासणा ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री डालचन्दजी जैन सागर (पूर्व सांसद) एवं श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर के अतिरिक्त अन्य अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

सभा में सलाहकार मण्डल के प्रतिनिधियों के रूप में सर्वश्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, जिनेन्द्रकुमारजी जैन इन्दौर, विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, मधुकरजी जैन जलगाँव, सुरेशजी जैन टीकमगढ़, डॉ. मानमलजी जैन कोटा, हीरालालजी काला भावनगर, मगनलालजी गोयल टीकमगढ़, अशोकजी जैन जबलपुर, जयकुमारजी जैन शिवपुरी, सुबोधजी सिंघई सिवनी ने अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी द्वारा ट्रस्ट का परिचय दिया गया। अन्त में महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों एवं प्रगति की जानकारी देते हुए आभार प्रदर्शन किया गया। मंगलाचरण कु. परिणति पाटील, जयपुर तथा संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री ने किया।

विमोचन ह्न शिविर के अवसर पर प्रवचनसार का सार, क्षत्रचूड़ामणि, समयसार का सार, प्रवचनसार अनुशीलन भाग-1, ऐसे क्या पाप किये, शलाका पुरुष पूर्वार्द्ध, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, नींव का पत्थर, जोगसारु, छहढाला (मूल एवं सचित्र), शांति विधान, मोक्षमार्गप्रकाशक अंग्रेजी आदि 16 पुस्तकों का विमोचन किया गया।

शिविर में महाविद्यालय के 165 विद्यार्थियों के सिवाय देश से पधारे लगभग 1150 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर नकद एवं उधार कुल 1 लाख 75 हजार रुपयों का सत्साहित्य तथा 22 हजार रुपयों के ऑडियो कैसिट्स एवं सी.डी. घर-घर पहुँचे। ●

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(डॉ. भारिल्ल को विद्यावारिधि..पृष्ठ 1 का शेष ....)

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने **विद्यावारिधि** की उपाधि ग्रहण करते हुए कहा कि भारत जैन महामण्डल ने वास्तव में मेरा नहीं अपितु तत्त्वज्ञान की धारा का सम्मान किया है। यदि यह समाज तत्त्वज्ञान का सहारा लेकर चले तो भेद-भाव की रेखाएँ मिट सकती हैं।

इस अवसर पर समाज की अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मान पत्र व प्रशस्तियाँ प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री मोहनदासजी अग्रवाल एवं वैद्य श्री केदारनाथजी शर्मा का स्वागत श्री टोडरमल स्मारक के एक्यूप्रेशर चिकित्सक डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री एन.के. सेठी, महासमिति के अध्यक्ष श्री विवेक काला, श्री एन.एम. रांका, श्री राजकुमारजी काला तथा श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी, उपाध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री सुमनभाई दोशी आदि भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे।

इसी समारोह में श्री सम्पतजी गदइया को समाजरत्न व स्व. सुन्दरकुमारी गदइया को समाज गौरव की उपाधि से सम्मानित किया गया।**ह्न अखिल बंसल**

(दशलक्षण महापर्व ...पृष्ठ 5 का शेष ....)

43.अलवर : पं.अजीतजी शास्त्री **44.महावीरजी :** पं.नेमचन्दजी शास्त्री, **45.उदयपुर (मु. मण्डल) :** पं.जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री।

अन्य प्रान्त ह्न 1.बैंगलोर : पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, **2.कोलकाता (नया मन्दिर) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, **3.भागलपुर :** पं.संजयकुमारजी सेठी जयपुर, **4.सिकन्दराबाद :** पं.रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, **5.कोयम्बटूर :** पं.अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, **6.हिसार :** पं.कैलाशचन्दजी मोमासर, **7.रानीपुर :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, **8.कोलकाता (पद्मोपुकुर) :** पं. अनीलजी धवल कानपुर, **9.एर्नाकुलम :** पं.आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, **10.हजारीबाग :** पं. वीरचन्दजी, **11.भागलपुर :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा, **12.कनकगिरि :** पं. नाभिराजनजी शास्त्री, **13.श्रवणबेलगोला :** पं. शान्तिसागरजी शास्त्री,**14.चम्पापुर :** पं. मनीषजी शास्त्री खडैरी।

दिल्ली प्रान्त - 1.ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललितपुर, 2. पं. पंकजजी शास्त्री बण्डा, 3. पं.कस्तुरचन्दजी बजाज भोपाल, 4. पं. अविरलजी शास्त्री विदिशा, 5. पं. पुरनचन्दजी जैन सोनागिरि, 6. पं. सत्येन्द्रमोहनजी जैन पडपडगंज, 7. पं. नितिनजी जैन नांगलराया, 8. पं.अमितजी जैन फूँटेरा, 9. पं.सुनीलजी बेलोकर, 10. पं.सुरेन्द्रजी शास्त्री शाहगढ़, 11. पं.सुशीलजी शास्त्री फूँटेरा, 12. पं.मनोजजी शास्त्री डडूका, 13. पं. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, 14. पं. राजीवजी जैन गुना, 15. पं. दीपकजी धवल भोपाल, 16. पं. प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, 17. पं. ऋषभजी जैन उस्मानपुर 18. पं. संदीपजी जैन बांसवाड़ा, 19. पं. संजीवजी जैन दिल्ली, 20. पं. श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 21. पं. सुरेशजी काले राजुरा, 22. पं. निकलंकजी शास्त्री कोटा, 23. पं. प्रशान्तकुमारजी मौ।

नोट ह्न जयपुर एवं शेष स्थानों की सूची आगामी अंक (सितम्बर-प्रथम) में प्रकाशित की जायेगी।

जयपुर शिविर 6 अक्टूबर से....

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष दशहरे के अवसर पर लगनेवाले शिविर की तिथि पूर्व में 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2005 तक निश्चित की गई थी; किन्तु अब यह शिविर **गुरुवार, दिनांक 6 अक्टूबर से शुक्रवार , 15 अक्टूबर 2005 तक** लगना निश्चित किया गया है।

अत: समस्त साधर्मी भाई-बहिन तिथि का ध्यान रखते हुये शिक्षण शिविर में अवश्य पधारें।

धर्मप्रभावना

जसवन्तनगर (उ.प्र.) : यहाँ भारतीय जैन महिला मिलन के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् ब्र. कल्पनाबेन, जयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं रात्रि में छहढ़ाला पर मार्मिक प्रवचन एवं कक्षा का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति होती थी।

अन्तिम दिन छहढ़ाला एवं गोम्मटसार कर्मकाण्ड विषय की परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया। **ह्न वीरांगना जैन**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

01 से 07 सितम्बर	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
08 से 17 सितम्बर	**अहमदाबाद**	**दशलक्षण महापर्व**
06 से 15 अक्टूबर	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
16 से 23 अक्टूबर	**दिल्ली**	**समयसार गोष्ठी**
25 से 29 अक्टूबर	**देवलाली**	**विधान**
30 अक्टू. से 01 नवम्बर	**धरमपुर**	**दीपावली**
06 नवम्बर	**जयपुर**	**गिरनार रैली**
16 से 21 नवम्बर	**किशनगढ़**	**पंचकल्याणक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त (द्वितीय) 2005

J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शनतथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127